REET 2025 LEVEL-1&2

वंदन बैच

संस्कृत

कारक तथा विभक्ति परिचय Part -2

LIVE 01-02-2025 03:00 PM

कारक-विभक्ति (भाषा प्रथम व भाषा द्वितीय दोनों के लिए

वाक्य में क्रिया की सिद्धि करने वाले को अथवा क्रिया के साथ जिसका सम्बन्ध होता है, उसे कारक कहते हैं। वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम आदि का क्रिया के साथ सम्बन्ध रहता है, इसलिए उसको कारक कहते हैं।

जैसे- मोहनः गृहं गच्छति।

यहाँ मोहन और गृह का सम्बन्ध गच्छति क्रिया से है। इसलिए ये दोनों शब्द कारक हैं।

जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता है, उन्हें कारक नहीं कहते हैं।

जैसे- रामः मोहनस्य पुस्तकं पठति।

यहाँ पर मोहन का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं है इसलिए यह कारक नहीं है। क्योंकि षष्ठी को कारक नहीं माना है।

कारक की परिभाषा

क्रियान्वित्वं कारकत्वम्

क्रिया के जनक को कारक कहते हैं।

क्रियान्वित्वं कारकत्वम् :

अन्बय का अर्थ होता है, सम्बन्ध। जिसका क्रिया के साथ साक्षात् या परम्परा से सम्बन्ध होता है अथवा जिसका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं।

क्रियानिष्यादकत्वं कारकत्वम् :

क्रिया का सम्पादन करने वाला कारक कहलाता है।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार क्रिया के साथ संबंध रखने वाले निम्नलिखित 6 कारक हैं।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहु: कारकाणि षट्।।

इस प्रकार कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, कारक ही कारकों में शामिल हैं, सम्बन्ध एवं सम्बोधन कारक को मुख्य कारकों की श्रेणी में नहीं रखा गया है क्योंकि सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता है। अतएव उसे "उपपद विभक्ति"' कहा जाता है।

इसी प्रकार सम्बोधन भी कारक नहीं होता है क्योंकि सम्बोधन को प्रथमा विभक्ति में शामिल किया गया है।

कारक का सामान्य परिचय

1 **कर्ता-** क्रिया को करने वाले को कर्ता कहते हैं।

2 **कर्म-** किसी क्रिया का कर्ता जिस वस्तु की सबसे अधिक इच्छा रखता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3 **करण**-जिस पदार्थ की सहायता से कर्ता अपना कार्य पूरा करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

4 **सम्प्रदान-** दान आदि क्रिया जिसे दी जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। .

5 **अपादान-** जिससे कोई वस्तु अलग हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

6 **सम्बन्ध-** दो वस्तु या व्यक्तियों के सम्बन्ध का बोध कराने वाले को सम्बन्ध कारक कहते हैं।

7 **अधिकरण-** किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

8 सम्बोधन- किसी को पुकारने, सम्बोधन या ध्यान आकृष करने के लिए सम्बोधन कारक का प्रयोग किया जाता है।

कारकों के नाम व चिन्ह

विभक्ति	कारक	कारक का पहचान चिन्ह
प्रथमा	कर्ता	ने (x)
द्वितीया	कर्म	को (x)
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से, अलग होकर
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के. की, रा, रे, री, ना, ने नी
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर, भीतर, अन्दर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, ओ, भो अयि, अरे!

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

1. प्रातिपदिकार्थलिङ् परिमाण वचनमात्रे प्रथमा-

प्रातिपदिक (किसी व्यक्ति या जाति) का अर्थ बताने के लिए लिङ्, (पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसक लिङ्ग) परिमाण (नाप, वजन) तथा वचन (एकवचन, द्विववचन, बहुवचन) और मात्रा बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) का प्रयोग किया जाता है।

• **प्रातिपदिकार्थ में:** शब्द में जब तक कोई विभक्ति नहीं लगती, तब तक वह प्रातिपदिक रहता है। इसलिए व्याकरण की दृष्टि से उसका अर्थ बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे- राम:, ज्ञानम्, श्री:

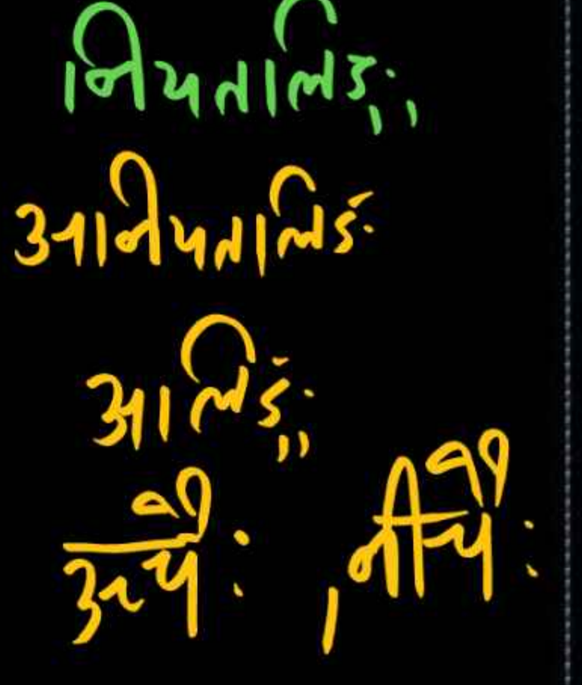

• लिङ्ग मात्र में किसी शब्द का लिङ्, बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे-

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
तटः	तटी
नपुंसकलिङ्ग	तटम्

परिमाण में: नाप या वजन बतलाने में प्रथमा होती है जैसे- द्रोणो व्रीहिः।

वचन मात्र में : एक वचन, द्विवचन और बहुवचन आदि संख्या को बतलाने के लिए प्रथमा विभक्ति लगती है।

जैसे- एक द्वौ, बहवः ।

सम्बोधने च सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। हे

राम+सु

हे राम। हे कृष्णौ! हे रमे !

स्वतन्त्रः कर्ता

कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

जिस वस्तु के लिए कर्ता क्रिया को करता है उसे कर्म कहते हैं।

कर्ता अपनी क्रिया से जिस पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक इच्छा रखता है वह कर्म संज्ञक होता है।

1. रामः रामायणं पठति।
2. शिशुः दुग्धं पिबति।
3. सोहनः चाकलेटं खादति।
4. सुनीता पत्रं लिखति।
5. अहं गृहं गच्छामि

राम रामायण पढ़ता है।
बच्चा दूध पीता है।
सोहन चॉकलेट खाता है।
सुनीता पत्र लिखती है।
मैं घर जाता हूं।

कर्तुरीप्सिततमं कर्म: कर्तुः ईप्सिततमम्

कर्ता के लिए जो सबसे अधिक इच्छित वस्तु होती है, उसकी कर्म संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) भक्तः हरिं भजति ।

यहाँ भक्त कर्ता है। कर्ता अपनी क्रिया से हरि को चाहता है। अत: हरि शब्द की कर्म संज्ञा है। और उसमें कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति होती है।

(ii) पयसा ओदनं भुङ्क्ते ।

यहाँ कर्ता के लिए भोजन क्रिया से ओदनं (भात) सबसे अधिक इच्छित है।

यद्यपि वह दूध भी प्राप्त करना चाहता है लेकिन दूध भोजन क्रिया में साधन है।

अत ओदन की कर्म संज्ञा होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

अकथितं च :

अपादन आदि विशेष कारकों से अविवक्षित (कर्ता जिसे कहना नहीं चाहता है) कारक कर्म संज्ञक होता है। इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ अपादान आदि का अर्थ प्रकट होता है लेकिन कहने वाला उसका प्रयोग नहीं करना चाहता है। तथा कर्म का ही प्रयोग करना चाहता है। वहाँ उस कारक की कर्म की संज्ञा होती है। इस सूत्र से जो कार्य होता है, उसे गौण या अप्रधान कर्म कहते हैं।

यह नियम दुह्, याच्, पच् आदि सोलह द्विकर्मक धातुओं पर होता है।

द्विकर्मक धातुओं में अपादान, करण, सम्प्रदान, अधिकरण इन चारों के शब्दों की कर्म संज्ञा होती है। ये चारों गौण कर्म कहलाते हैं।

द्विकर्मक क्रियाएँ- दुह् (दुहना)। याच् (मांगना), अथवा भिक्ष् (मांगना), पच् (पकाना), दण्ड् (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना) ब्रू अथवा भाष् (बोलना), शास् (शासन करना) जि (जीतना), मथ् (मथना), मुष् अथवा चुर् (चुराना) नी (ले जाना) हृ (हरण करना), कृष् (खींचना) वह् (ले जाना) ये सोलह द्विकर्मक (दो कर्म वाली) क्रियाएँ हैं। अर्थात् इन क्रियाओं के योग में दो बार द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। •

माता धेनुं दुग्धं दोग्धि-

मुख्य कर्म

यहाँ धेनु सामान्यतः अपादान कारक है लेकिन कर्ता के लिए यह अपादान कारक के रूप में विवक्षित नहीं है अपितु दूध रूप कर्म के हेतु रूप में विवक्षित है। अतः दुह धातु के योग में धेनु की कर्म संज्ञा होती है।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

- सेवकः नृपं क्षमां याचते भिक्षते वा। (सेवक राजा से क्षमा मांगता है)
- माता तण्डुलान् ओदनं पचति। (माता चावलों से भात पकाती है)
- नृपः दुर्जनं शतं दण्डयति। (राजा दुर्जन पर सौ रुपए का दण्ड लगाता है)
- कृष्णः व्रजं गां रुणद्धि। (कृष्ण ब्रज में गाय को रोकता है)
- शिष्यः गुरुं धर्मं प्रच्छति। (शिष्य गुरु से धर्म को पूछता है)
- मालाकारः लतां पुष्पाणि चिनोति। (माली लता से फूलों को चुनते हैं)
- शिक्षकः छात्रं धर्मं ब्रूते भाषते वा। (शिक्षक छात्र से धर्म कहता है)
- जनकः पुत्रं धर्मं शास्ति। (पिता पुत्र को धर्म बताता है)

- मोहनः रामं शतं जयति। (मोहन राम से सौ रुपए जीतता है)
- हरिः सागरं सुधां मथ्नाति। (हरि समुद्र से अमृत मथता है)
- रामः देवदत्तं शतं मुष्णाति वा। (राम देवदत्त से सौ रुपए चुराता है)
- कृषकः ग्रामम् अजां नयति। (किसान गाँव में बकरी ले जाता है)
- ग्रामं भारं वहति (गाँव में बोझा ले जाता है)